मासिक—

मानव मन्दिर

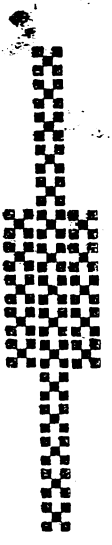

सम्पादक :— एम. आर. भक्त
पी. एस. ई (रीटार्यड)

वर्ष ६ | मंगलवार १० जुलाई १९७९ | संख्या ३

दो जहां का पीर

सत्संग परम सन्त परम दयाल
फकीर चन्द जी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक 12-4-79

राधास्वामी । मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं फकीर चन्द ! तू ने यह मकड़ी का जाला बनाया है ? किताबें लिखता हैं, सत्संग कराता है, तेरा स्वार्थ और भाव क्या है ? तू ने यह सौदा क्यों लिया ? ये मेरे अपने खोटे कर्म हैं ।

आप दूर दूर से आये हैं और भी आयेंगे, यह मैं महसूस करता हूं । मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं तूने यह पाखण्ड का जाल बनाया: तू किसी को क्या दे सकता है ? नीचे लिखा शब्द, दाता दयाल महर्षि

शिवब्रतलाल जी महाराज ने मेरे नाम लिखा था। मैं अढ़ाई महीने की छुट्टी बग़दाद से आया था। जब जाने लगा तो उन्होंने यह शब्द मेरे नाम लिखा :-

कौन है शादां यहां, शादां फकत ज़ाते फकीर।
खुश नहीं हरगिज़ तवंगर, मालों ज़र वाले अमीर।

इस संसार में माल, धन वाले अमीर अर्थात् कोई खुश नहीं। खुश केवल फकीर की ज़ात है।

तर्के दुनियां तर्के उकबा तरके मौला कर दिया।
तर्क का भी तर्क है, इस तर्क से दिल भर गया।

यह फकीर की पहचान है। वह खुश, चिन्ता-रहित रहता है। लालच और मोह के चक्कर में नहीं आता।

चशमे वहदत बीं मिली वहदत का मंज़र देखकर,
कर रहा है रात दिन, दुनियां की मंज़ल का सफर।
क्या है दुनियां ख्वाब है और खाव बीं ज़ाते फकीर,
दामे हरसो मालोज़र मैं वह नहीं हरगिज़ असीर।

वह धन धान्य और मान प्रतिष्ठा के लिए काम नहीं करता और ईश्वर को भी याद नहीं करता।

संसार के पीछे भी नहीं फिरता। मैंने अपने जीवन में फकीर बनने की कोशिश की है। जब मैं दाता के पास गया था तो उन्होंने फकीर के लक्षण एक शब्द में बताये थे।

तू फकीर बन, तू फकीर बन तू फकीर बन भाई।
मैं भी तरूं फकीर चरन लग, है फकीर सुखदाई।

अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं, फकीर चन्द! तू यह काम करता है। तू क्या कहना चाहता है? तेरे काम का कोई लाभ है? मैं महसूस करता हूं। आप लोग बड़ी-बड़ी दूर से आये हैं, क्या मेरे सिर पर कोई जिम्मेदारी नहीं है? है। वह जिम्मेदारी मैं उतारना चाहता हूं। यह मेरे सिर पर गुरु ऋण है।

खाक में दुनियां मिली, और खाक ही है वह मुदाम,
वह खुशी से शादमां रहता है हरदम सुबो शाम।
आवदो महबूबियत, महबूद से आजाद है,
खुश मुजस्सम खुश है दिल का रूह का वह शाद है।

कोई संत जो असली संत है वह न आबद होता है न महबूद होता है न अवादत करता है। वह किसी की भक्ति नहीं करता उसका न कोई पूज्य

होता है न परमेश्वर होता है न गुरु होता है और न कोई और होता है। वह अपनी ज़ात में अपने आप में खुश रहता है। जब तक कोई आदमी गुरु की पूजा करता रहेगा, किसी ईश्वर को मानता रहेगा, उसे वह मत्था टेकता रहेगा या संसार के झमेले में रहेगा, वह न संत है न फकीर है और न साधु है। दाता दयाल ने मुझे फकीर की पहचान बताई है।

जिसको देखो इस तरह समझो वह है सच्चा फकीर।
दस्तगीरे दो जहां और दो जहां का है वह पीर।

ऐसे आदमी को दो जहां का पीर कहते हैं, फकीर कहते हैं। मैं अब अपनी आत्मा से पूछता हूं अगर तू फकीर बन गया, ये लोग तुम्हारे पास आते हैं, कई दूखी हैं। तू इनकी क्या सहायता कर सकता है? मुझे यह खुशी नहीं होती कि हजारों आदमी आते हैं, मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं तू दो जहां का पीर है तो तू क्या किसी की सहायता कर सकता है? दो जहां क्या है? एक शारीरिक दूसरा मानसिक। एक हमारे शरीर का, बाहर का जहां

दूसरा हमारे दिल का जहां। मेरे पास दुखी आते हैं। सबसे बड़ा दुख शारीरिक स्वास्थ्य का है। जो आदमी सदा बीमार रहता है, वह सुखी नहीं और जो भवसागर अर्थात मन के चक्कर में और मन की तरंगों में आया हुआ है वह भी सुखी नहीं। तो मैं क्या करता हूं ? मैं उस नियम द्वारा जो प्रकृति का नियम जाग्रत और स्वप्न में काम करता है, उसके आधार पर जो कोई आता है उसके दुख को सुनकर अपना विचार प्रकट कर देता हूं। जो उसपर अमल करते हैं उन्हें लाभ पहुंच जाता है और Credit मुझे मिल जाता है। अब जिससे दो जहां का पीर हो सकता है वह क्या चीज़ है ? सबसे पहली बात तो यह है कि अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो। स्वास्थ्य के बिगड़ने में कुछ तो पुराने कर्म हैं, कुछ आयु का भी लिहाज़ होता है मगर सबसे अधिक विषय विकार का जीवन है। इसके लिए अपने मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य का ध्यान रखो। अर्थात काम की और बिना आवश्यकता मानव का ध्यान न जाये।

अब मेरे सिर पर दो जहां के पीर का कर्त्तव्य है। मैंने इन शब्दों से अनुचित लाभ नहीं उठाया। दो जहां का पीर मैं कैसे बन सकता हूं, वह मैं कहता हू। तुम लोग दूर दूर से आये हो। सबसे पहले स्वास्थ्य का ध्यान रखो। यह स्वास्थ्य बिगड़ता क्यों है? पहले तो कुछ मां बाप का दोष। मां या बाप को अगर जुकाम हुआ है, बुखार हुआ है, या कोई विशेष कष्ट है फिर वे भोग करेगें तो जो बच्चा पैदा होगा वह रोगी होगा। यह एक रहस्य है।

दूसरा हमारा शरीर का दुख है। किसी का हमपर अनुचित दबाव। हम ग़लतियां खाते हैं, चोरियें करते हैं, डाके मारते हैं, कितने ही उत्साह पूर्ण हों मगर फिर भी इस बात का ध्यान तो रहता है कि मैं पकड़ा न जाऊं। दूकरे दबाव अधीन आदमी तभी आता है जब उसे कोई स्वार्थ होता है। तभी आदमी मुकाबला करता है जब दूसरे से शक्तिशाली होता है। जिन लड़के और लड़कियों ने जबान होने से पहले अपने ब्रह्मचर्य को खोया हुआ है उनके भाग में अशान्ति है। मेरे पास बड़े बड़े

नौजवान आते हैं। उनमें से पचास प्रतिशत वे होते हैं जिन्होंने अपना ब्रह्मचर्य खोया हुआ होता है। जिनको जरयान की बीमारी है, स्त्रियों को लकोरया होता है। यह क्यों होता है? क्योंकि लड़के या लड़कियां मानसिक रूप से काम की ओर अधिक ध्यान रखते हैं। इसलिए दो जहां का पीर होने की स्थिति में जो दाता दयाल ने मुझे काम दिया था, मैं क्या करूं? यही कह सकता हूं कि अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो। अधिक विषय मत कमाओ। हमारे छः छः सात सात बच्चे होते हैं फिर भी हम इस काम के पीछे दौड़ते हैं तो फिर बुढ़ापा जल्दी आ जाता है, कोई न कोई रोग आ जाता है। अगर बीमारी न आये तो मन अशान्त हो जाता है। मन की अशान्ति का अधिक कारण ब्रह्मचर्य का अधिक गिरना है। संतान इतनी पैदा करो जितनी तुम सम्भाल सकते हो। अगर अधिक संतान पैदा करोगे तो लड़कों के विवाह के लिए धन चाहिए। संतान को संतान के विचार से पैदाकरो। आजकल की सन्तान स्त्री और पुरुष के स्वाद से अपने आप हुई है। स्त्री और पुरुष का सम्बन्ध स्वाद

के लिए नहीं है। स्त्री और पुरुष का सम्बन्ध केवल अच्छी संतान पैदा करने के लिए है। यह जो खुदरौ संतान होती है, यह वेज़बत संयमहीन होती है। इनमें अपने आप को वश में रखने की शक्ति नहीं होती। ये मन पर काबू नहीं कर सकते। क्यों नहीं कर सकते ? क्योंकि मां बाप केवल काम भोग के लिये मिलते हैं। मैंने आपको क्या कहा।

जिस आदमी को ज़्यादा स्वप्न दोष होते हैं, Night Discharges होते हैं, वह कमज़ोर हो जाता है यह तुम जानते ही हो कि उसकी मानसिक शक्ति ठीक नहीं रहती। दो जहां का पीर होने के रूप में और शारीरिक जाग्रत अवस्था में जो मैंने समझा वह आपको कहा। इन्सान रोते हैं। मैंने कई आदमियों को देखा है। उनका दोष नहीं मानता। मैं स्वयं रोता रहा हूं। उस समय तो मुझे पता नहीं था कि मैं क्यों रोता हूं। अब मैं जानता हूं कि मैं क्यों रोता रहा हूं। जिस आदमी में किसी न किसी प्रकार की कमज़ोरी है और कोई आशा है, वह आशा पूरी नहीं होती, तब वह रोता है या शरीर की बीमारी से रोता है या उसने कोई ग़लत काम किया

हुआ है, रिशवत खाई हुई है, मुकद्दमा बना हुआ है तब रोता है। झूठो दो दिन ढायें मार मारकर जेल के अन्तर रोता रहा। क्योंकि उसने जो कर्म किये हुये थे, वे उसके सामने आते थे। उसको फांसी का मिलना एक मुवारिक है। मगर जो वह रोता रहा और दुखी होता रहा, वह उसे ग़लत काम का दण्ड मिला। एक दिन मरना तो है ही, बल्कि यह अच्छी मौत है। गले में फांसी लगाई, दो मिण्ट में मर गया। कोई दुख नहीं। मगर इससे पहले जो दो दिन रोता रहा या चिन्ता करता रहा वह उसके अपने कर्मों के कारण था।

नौजवान बच्चे, लड़कियां, ये बुरी संगत में ग़लत काम करते हैं अगर फिर उनके जीवन में रोना न आये तो क्या आये ? मेरा विवाह बारह साल की आयु में हुआ। साढ़े सोलह: साल की आयु में गृहस्थ में फंसा। मेरा ध्यान भक्ति की ओर था। रोया करता था। जब दाता दयाल के दरवार में जाता था तो प्रेम के कारण रोया करता था। जब वहां से जुदा होता तो फिर रोता था। मैं बसरे वगदाद

में भी प्रार्थना करता था। तो पुरुषोत्तम दास ने दाता दयाल को पत्र लिखा कि जितना प्रेम फकीरचन्द में है उतना किसी में नहीं। वह आपकी याद में रोता रहता है। हमें भी ऐसा प्रेम प्रदान करें। दाता दयाल ने उत्तर दिया कि जिसके भाग्य में रोना है वह रोयेगा तुम फकीरचन्द की नकल क्यों करते हो। मैं पतित था। पतित गिरे हुये को कहते हैं। गिरना कहां से ? अपने आपसे गिरकर जो कुछ मन के अन्तर से विचार निकलते हैं, उनको सत मान लेना हमारा गिरना है। मैं ऐसा समझता हूं।

मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य रखो। अगर आप अपनी संतान अच्छी देखना चाहते हो तो संतान को संतान के विचार से पैदा करो। जब स्त्री पुरुष अपने स्वाद के लिए मिलते हैं तो वे अपना ब्रह्मचर्य अनुचित खोते हैं। फिर वे यह आशा रखें कि उनको शान्ति मिले, यह ग़लत है। ऐसा नहीं हो सकता, असम्भव है। एक मेरे जीवन का अपना अनुभव और दूसरा सत्संगी लोगों का। नौजवान मेरे पास रोते हुये आते हैं। मैं उनकी बीमारी का कारण समझ जाता हूं और उन्हें उनकी अशान्ति को दूर करने का

इलाज बता देना यही गुरुमत है और इसी का नाम गुरुमत है। सन्तमत तो बड़ी ऊंची चीज़ है। सन्तों का मार्ग तो केवल जन्म मरण से रहित होने के लिए है, संसार के लिए नहीं।

दाता दयाल ने लिखा है कि फकीर दो जहां का पीर होता है। वे दो जहां कौन से हैं? एक जहां तो यह जाग्रत अवस्था है। इसको बाबत मैंने आपको संक्षेप में बता दिया, लम्बा नहीं किया कि अपने स्वस्थ्य का ध्यान रखो, विषय विकार मत करो। जब तुम्हारा और तुम्हरी पत्नि का स्वस्थ्य ठीक नहीं है अगर मालिक न करे उसके पेट में बच्चा आ जाये तो वह बच्चा कभी भी स्वस्थ न रहेगा। असम्भव है, यह विज्ञान है।

अब मानसिक संसार का विचार रह गया। इसका मुझे विश्वास हो गया कि मानव के विचार में शक्ति है। जो कुछ तुम सोचते हो तुमपर प्रभाव करेगा। इसलिए अपने विचारों को शुद्ध रखो जैसा ख्याल करोगे वैसे हो जाओगे। अगर कोई दुखी मेरे पास आता है तो मैं विचार की फिलौसफी समझकर उसको उसकी शारीरिक दशा को देखकर

राये दिया करता हूं। वह जो मैं राये देता हूं उसका नाम गुरुमत है। लोग कहते हैं, बाबा नाम नहीं देता कौन कहता है मैं नाम नहीं देता ? मैंने संसार को जितना नाम दिया उसका कोई हिसाब नहीं। नाम क्या है ? राधास्वामीमत के अनुसार ऊंचा नाम तो चौथे पद में रहता है। नाम राय देना है, सलाह देने *Suggestion* देना, *Impression* देना। दूसरे इससे लाभ उठा जाते हैं।

आप लोग आये हैं, क्योंकि मेरे जिम्मे कर्त्तव्य था इसलिए मैंने निर्भय होकर जो कुछ समझा, वह आप को कहता रहता हूं। सब से अधिक तुम उधेड़ आयु वाले हो, तुम्हारे बच्चे हैं लेकिन अब भी तुम स्त्रियों के पीछे दौड़ते हो, तुम दोषी हो। स्त्रियें प्रकृति ने विषय भोग ने के लिए पैदा नहीं की। यें तो संसार की उत्पति के लिए आई हैं। स्नेह और प्यार से रहो जीवन व्यतीत करो। प्यार में शक्ति है। जिस घर में कलह: हैं वहां कभी सुख नहीं। यह आपको बताये देता हूं। इस वास्ते मैं दो बातों पर ज़ोर देता हूं। मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य और घर की शान्ति (Home Peace)। मान लो, एक

आदमी ने ग़लती खाई है, क्षमा मांग ले। जीवन प्रेम से व्यतीत किया करो। जो स्त्री पुरुष घर में झगड़ा करते हैं या अधिक ब्रह्मचर्य खोते हैं वे आज भी दुखी हैं और कल भी दुखी हैं बस! आज इतना ही काफ़ी है।

सब को राधास्वामी

सत्संग परमसंत परमदयाल
फकीरचन्द जी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर।

दिनांक 13-4-79

राधास्वामी। एक दिन पहले वह शब्द पढ़ा गया था जो दाता दयाल ने मेरे नाम लिखा था। उसमें लिखा हुआ है कि फकीर वह है जो आबद, महबूद और अबादत से निकल गया और वही दो जहां का पीर है। आप लोग कितनी कितनी दूर से कितना रुपया खर्च करके आये हैं। मैं सत्यप्रिय इन्सान हूं। पिछले दिन विचार आया था कि तू ने यह मकड़ी का जाला क्यों बिछाया? वह दो जहां का पीर कैसे हो सकता है और वह क्या कर सकता है?

पीर गुरु को कहते हैं। दो जहां एक जाग्रत का खेल और दूसरा मन का खेल है। उसे प्रकृति

का ज्ञान हो जाता है। बिना कारण के कारज नहीं होता। हर एक चोज़ का कोई न कोई कारण तो अवश्य है। पहले दिन मैंने जाग्रत के खेल में, अपने जीवन के अनुभव और सत्संगियों के अनुभवों के आधार पर कहां था कि सबसे पहले अपने स्वास्थ्य और मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य का ध्यान रखो, और जहां तक हो सके ज़वान के चटखारे न लिए जायें। जो आदमी भी समय से पहले अपने ब्रह्मचर्य को ग़लत ढंग से खोता है उसके भाग्य में रोना, दुखी होना, अशान्त होना और गुरुओं के पीछे फिरना एक लाज़मी बात है। भक्ति कौन करता है ? जिसमें कमज़ोरी है। जब मैं किसी लड़के को अज्ञान की भक्ति करते देखता हूं तो मैं तुरन्त समझ जाता हूं कि इसका ब्रह्मचर्य गिरा हुआ है और मेरा वह ख्याल विल्कुल ठीक निकलता है। हम लोग जो ज़्यादा अज्ञान की भक्ति करते हैं, ये सब लोग वे हैं जिनके ब्रह्मचर्य गिरे हुये हैं और जिन्होंने अधिक विषय भोगा हुआ है। मेरे एक मित्र थे जब दाता दयाल गिद्दड़बाह में आये तो वह उनके पोछे ऐसा फिरता था जैसे पंतगा दीपक के पीछे फिरता है। मैं

अपने मकान पर था। वह आया और कहने लगा कि मैं अशान्त रहता हूं। मैंने कहा तेरा इलाज दाता दयाल के पास नहीं है। उसने कहा-तुम करदो। मैंने कहा-दाता दयाल के चोला छोड़ने के बाद करूंगा। जब फिर वह मेरे पास फरीदकोट आया तो मैंने कहा, तू बड़ा व्यवचारी है। उसे क्रोध आ गया। वह कहने लगा आप झूठ बोलते हैं, मैं अपनी स्त्री के अतिरिक्त किसी के पास नहीं गया। मैंने कहा :-

छुरी प्राई आपनी मारे दर्द जो हो"

अपनी स्त्री हो या दूसरे की स्त्री हो, वह हमारा Social Law है। आप बताओ, आपका विवाह कब हुआ ? चौदह साल की आयु में। बीबी की आयु कितनी थी ? चौदह साल की। कितना विषय भोगा ? वह कहने लगा, मैं हकीम था, दवाईयें खाकर खूब विषय भोगता था। मैंने कहा-वह जो तुमने विषय भोगा हुआ है वह तुम्हारी अशान्ति का कारण है।

कल जब यह शब्द पढ़ा गया था तो तुरन्त विचार आया था कि फकीर दो जहां का पीर हो

सकता है, तो तू बता, तू दो जहां में किसी की क्या सहायता कर सकता है ? तू दो जहां का पीर कैसे हो सकता है ? सुनो ! इन्सान का बच्चा पैदा होता है । वह पैदा होते ही क्या चाहता है ? राम, राम या अल्ला अल्ला ? नहीं । उसको गुड़सत चाहिए, खाने को कुछ चाहिए । अगर संसार में सुखी रखना चाहते हो तो सबसे पहले प्रकृतिक धर्म यह है कि जितना हो सके कमाओ, बेकार मत रहो । अपनी कमाई किया करो । कमाओ और अपनी आर्थिक अवस्था को ठीक रखो । मुझे दाता दयाल की एक घटना याद आती है । वह लाहौर में थे । एक फकीर भीख मांगने वाला जवान आया । उसने मत्था टेका । क्यों भई ! महाराज ! मुझे नाम दे दो । मैं वहीं था । दाता दयाल ने कहा भाई ! मैं नाम देने की फीस लेता हूं । अगर दे सकते हो तो नाम लेलो । महाराज ! कितनी फीस ? तीन सौ रुपये फीस है । उसने कहा बहुत अच्छा जी । वह चला गया उसने वह अपने साधुओं वाले कपड़े उतार दिये । एक लकड़ी के टाल पर कुलहाड़ा लेकर लकड़ियां फाड़नी आरम्भ कर दी । वह तीन साल तक काम

करता रहा। तीन साल में उसने तीन सौ रुपये बचाये वह तीन सौ रुपया लेकर दाता दयाल के पास आया। उस दिन मैं भी वहीं था। वह कहने लगा, महाराज! यह तीन सौ रुपये लो और नाम दे दो। उन्होंने कहा बहुत अच्छा। उन्होंने उसे Initiate कर दिया। दस पंदरह दिन अपने पास रखा। अभ्यास करता रहा। दाता दयाल कहने लगे। यह अपना तीन सौ रुपया ले जाओ, विवाह कराओ, गृहस्थ का जीवन व्यतीत करो और साधन करते रहो। मैं आपको एक सच्ची मिसाल दे रहा हूं। अगर गृहस्थ में साधन नहीं है तो फजूल है गृहस्थ में रह कर साधन करो।

दूसरे अपने विचार को ठीक रखो। दाता लिखा करते थे जैसा ख्याल वैसा हाल, जैसी मती वैसी गती, जैसी करनी वैसी भरनी। उनके ये शब्द हर एक किताब में लिखे हुये होते थे। विचार को ठीक रखने के लिए क्या करना चाहिए? तुम घरों में प्रेम और शान्ति से रहो। अगर तुम्हारा अपने घरों में प्रेम नहीं, पति पत्नि का प्रेम नहीं, बच्चे और बाप का प्रेम नहीं, उन्हें आज भी दुख आयेगा और कल

भी दुख आयेगा। अगर मैं किसी का नाम लेता हूं तो उसे क्रोध आयेगा। मेरा एक मित्र था। वह अपनी स्त्री से सदैव झगड़ा किया करता था। उसकी स्त्री भी झगड़ालू थी। मैं क्योंकि उनके घर के हालात को जानता था। मैंने कहा-विपत्ति आयेगी। उसका पति मर गया और वह पन्द्रह सोलह साल विधवा रही। अन्त में दमाग़ ठीक न रहा बुरे विचार का क्या परिणाम होता है। पता नहीं सच है या झूठ, शास्त्र कहते हैं जो स्त्री स्वप्न में भी अपने पति के साथ लड़ाई करती है वह दूसरे जन्म में विधवा होती है। यह पुरान कहते हैं। एक मेरा और दोस्त है। उसकी स्त्री और बहु की सारा जीवन नहीं बनी। उसका अठारह साल का पोता मर गया। उसका पोता एक ही था।

जो कुछ तुम सोचते, विचार करते और किसी से द्वेष शत्रुता रखते हो उसका प्रभाव तुम्हारे पर होगा। कोई नहीं रोक सकता। यह Law of nature अर्थात प्रकृति का नियम है। क्योंकि विचार में शक्ति है इसलिए तुम्हारा विचार तुम्हें ले डूवेगा और जिसके विरुद्ध तुम सोचते हो उसे भी ले डूबेगा।

अपने दिल को साफ रखो। उसमें काम का विषय या शत्रुता ईर्षा न लाओ।

यह सत्संग है। सत्संग से क्या मिलता है ?

विन सत्संग विवेक न होई।
राम कृपा बिन सुलभ न सोई।

सत्संग से सच्ची समझ मिलती है। जिस घर में स्त्री पुरुष की नहीं बनती वहां कोई न कोई दुख अवश्य आयेगा, कोई नहीं बचा सकता। कुछ इस जन्म के कर्मों का फल होता है। तो हम सबको क्या करना चाहिए ? घरों में शान्ति रखा करो जिस घर में कलह है वहां सुख नहीं। मैं अपना अनुभव आपको बताया करता हूं। मेरे ताये के लड़के की स्त्री मेरी स्त्री की सगी बहन थी। उसका नाम ब्रह्मी था। उसकी सास और वह दोनों आपस में लड़ती थी। मैंने कभी घर जाना तो मैंने कहना ब्रह्मईए ! कुछ होश की दवाकर नहीं तो दुःखी होगी। मगर कौन सुनता था। उसके घर डाका पड़ा और डाकू सब कुछ ले गये। उसका पति, मेरा भाई, ताये का लड़का पांच साल दमें का बीमार रह कर मर गया।

उसे टी-वी हो गई। मैं अपना मुँह तो काला कर सकता हूं। मैं कई सत्संगियों के हालात को जानता हूं। अगर उनका नाम लूं तो वे मुझे गाली निकालेंगे। अंधे को अंधा कहो तो उसे क्रोध आता है।

तुम्हारे बिचार में बड़ी शक्ति है। तुम घरों में रोटियां पकाती हो, तुम्हारे दो महमान आ जाते हैं, स्त्रीयें कुढ़ती हैं कि क्या मुसीबत आ गई रोटी पकानी पड़ी। जो उस रोटी को खायेगा वह बीमार हो जायेगा।

फकीर दो जहां का पीर कैसे हुआ ? वह ज्ञान देता है How to live ? अपना जीवन किस प्रकार व्यतीत करना है। देश के बनाने वाली माताऐं हैं। जिस मकान की नींव (Foundation) कमज़ोर है उसके ऊपर मकान नहीं चल सकता मां बाप के मिलते समय जैसे विचार होते हैं उनका थोड़ा बहुत प्रभाव बच्चे पर अवश्य आयेगा। मैंने अपने घर में आज़माया है। मैंने अच्छी संतान के विचार से एक लड़का पैदा किया था मुझे बचपन से आज दिन तक अवसर नहीं मिला कि उसे बुरा भला कहूं मारना तो एक ओर रहा। बाकी जो खुदरौ संतान थी वह

सब मर गई। मालिक ने मुझ पर दया कर दी। आप देखते हो देश में क्या हो रहा है। यह क्यों हो रहा है ? क्योंकि हम जितने आदमी सिवाय विशेष-विशेष के ये सब खुदरौ संतान है, बेज़बत हैं। क्योंकि हम बेज़बत होकर अपने स्वाद के लिए स्त्रियों के पास गये, बच्चे पेट में आ गये। फिर तुम कैसे आशा कर सकते हो कि वे बच्चे तुम्हारे किसी काम आयेंगे या देश को लाभ पहुंचायेंगे। बिल्कुल असम्भव है।

मैं अध्यात्मिकता के बारे तो कल कहूंगा। आज आपको संसार बारे कहता हूं। बिचार में बड़ी शक्ति हैं। अपने बच्चों को सदा अच्छा विचार दो। मुझे यह अनुभव दाता दयाल ने सिखाया था। एक बार उनका दो तीन साल का दोहता खेल रहा था। मैंने कहा-तू बड़ा गन्दा है। मुझे अन्दर से दाता दयाल की आवाज़ आई, फकीर ! ऐसा नहीं कहना, तुम्हारे ख्याल का प्रभाव बच्चे पर जायेगा इस वास्ते निन्दा नहीं करनी चाहिये।

मत देख पराये औगण, क्यों पाप बढ़ावे छिन-छिन।
मक्खी सम मत कर भिन्न-भिन्न, यह बात कही मैं चुन-चुन।
नहीं तो रोओगे सिर धुन-धुन।

ऐसी २ बाणियें हैं। जो आदमी दूसरों के ऐबों को देखता रहता है या तुम घरों में रहते हो सास, बहु का झगड़ा है, भाई भाई का झगड़ा है उसे स्वयं भी शान्ति नहीं है और दूसरों को भी शान्ति नहीं है। इस वास्ते सदा अपने विचार को ठीक रखो।

यह नामदान केवल उनके लिए है जिनका मन काबू में नहीं है। एक आदमी दो घण्टे समाधि लगाता है, सारा दिन उसका मन उसके कंट्रोल में नहीं है जो इच्छा करे करता फिरे, उसे दो घण्टे की समाधि का कोई लाभ नहीं है। इस लिए स्वामी जी ने लिखा है कि मन की निरख परख किया करो। आजकल हर आदमी को नाम दिया जाता है जो कि एक गलती है। नाम हर आदमी के लिए नहीं है। मेरा छोटा भाई सातवीं कक्षा में पढ़ता था। अपने आप ही लाहौर भाग गया। वहां से नाम ले आया। दाता दयाल ने नाम दे दिया और कहा-तुमने नाम को नहीं जपना। तुझे क्या करना है ? Life means work and work means life. काम करो। तुम में नौजवान बच्चे होंगे। लोगों की बातें सुन-सुन कर

तुम उनके पीछे फिरते हो। तुम्हारा कर्तव्य और, जवान का कर्तव्य और, बूढ़े का और और स्त्री का कर्तव्य और है। हाथी के लिए अंकुश चाहिए, गधे के लिए डन्डा, घोड़े को लगाम और ऊंट को नकेल चाहिए। सारे आदमियों के लिए एक ही बात नहीं है। इस वास्ते हमारे हां गुरु की पूजा है। ऐसा नहीं कि उनके सामने आरती करते रहो बल्कि गुरु की बात को समझो और उसपर अमल करो तब तुम्हारा कल्याण होगा। यह बिल्कुल सच्ची बात है। मगर मन को वश करना हमारे अधीन है यह एक समस्या है।

संसार में रहने के लिए मैंने आपको **प्रवृत्तिमार्ग** में बता दिया कि तुम्हारा विचार काम करता है। विचार के अन्तर नीयत होती है। अपनी ज़ात के लिए किसी के साथ हेराफेरी धोखा फरेब मत करो घरों में शान्ति रखो। प्रेम और सच्चाई से रहो। आजकल बहुत लड़के लड़कियां मंगलीक पैदा होते हैं। पहले ज़माने में बहुत ही कम होते थे। ये क्यों होते हैं ? क्योंकि जब पति पत्नि आपस में मिलते हैं तो उनके दिल मिले हुये नहीं होते, बच्चा पेट में

आ जाता है। वे बच्चे मंगलीक होंगे। तुम बूढ़े हो गये हो। तुम्हारे सात-सात और नौ २ बच्चे हैं फिर भी तुम विषय भोगने से बाज नहीं आते। इसका जिम्मेवार कौन है ? तुम आप हो।

जहां काम वहां नाम नहीं, जहां नाम नहीं काम।
रवी रजनी दोनों न मिलें एक ठौर एक याम॥

यह बिल्कुल सच्ची बात है। इसलिए मैं कहता हूं ऐ इन्सान ! अपनी नीयत को साफ रख, अच्छा विचार रख। लोकलाज में मत आओ। तुम ऋण उठाकर लड़कियों का विवाह करते हो। तुम दुखी होते हो। ऋण तुम्हारे सिर पर होता है। तुम समझते हो कि जो दाज तुमने लड़की को दिया है वह उसे लाभ पहचायेगा, बिल्कुल नहीं।

विचार में बड़ी भारी शक्ति है। मैंने स्वयं आज़माया हुआ है। मेरी स्त्री स्वयं *Self respect* वाली थी। अगर किसी ने कुछ कह दिया तो दुखी होती थी। उसने दाता दयाल को लिखा। दाता दयाल ने कहा तुम्हें तुम्हारा पति वापिस किया जायेगा। दो चार साल इन्तज़ार करो। संतानवान होगी। जो तुम्हें

एक ताहना दे उसे सोलह ताहने गिनकर सुनाया करो चाहे फकीरचन्द भी क्यों न हो। अब यह भी कोई शिक्षा है। मगर सन्तों की यह शिक्षा है। जीवन का उदेश्य निर्भय, निर्वैर और अडोल रहना है। यही गुरु नानक सहिब का मूल मन्त्र है।

सन्तमत का तात्पर्य तो केवल जन्म मरन से पार होना है। मगर परमार्थ या जीवन को बनाने के लिए तो कोई आता नहीं जब तक उसके लिए कोई आदमी मन से परे नहीं जायेगा उस का आवा-गवन नहीं छूट सकता। योग आदि सब मन से ही तो करते हो। मन से परे गुरु के चरण प्रकाश हैं। बाहरी गुरु के पांव धोने से तुम पार नहीं जा सकते। वह तो केवल एक मन का आवेग है, आया और चला गया। संतों के मार्ग में प्रकाश का साधन है और सनातन में यही गायत्री मन्त्र का साधन और सवित्री के दर्शन हैं।

आज मैंने अपने आपको पूछा कि तू दो जहां का पीर है ? हां। कैसे ? मने समझ लिया कि विचार की शक्ति है। कुछ पिछले जन्म के कर्म

कुछ हमारी विचार शक्ति जैसा ख्याल वैसा हाल, जैसी मती वैसी गति। दाता दयाल ने मुझे शिक्षा बदलने की आज्ञा दी थी। आप लोग दूर २ से आते हैं। मैं एक बड़ी जिम्मेदारी महसूस करता हूं। अगर मैं अपनी नीयत को साफ रख कर वह बात नहीं कहता जो मेरा कर्तव्य है तो मैं अपने आपको दोषी समझता हूं। मैं दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूं यही ठीक है। मगर मेरे अनुभव में जो सच्ची बात आई है वह मैं बताता रहता हूं।

मैंने यह काम क्यों किया? अपने जैसे मूर्ख गृहस्थियों को समझाने के लिये कि तुम लुट न जाओ। इन गुरुओं, महात्माओं ने हमें मूर्ख बनाकर लूटा है। आजकल गुरुओं ने क्या प्रचार किया हुआ है? नाम लेलो, गुरु नें तुम्हारे सारे पाप ले लिए। गुरु अन्त समय तुम्हें सतलोक पहुंचा देगा। एक और फिरका निकला है। वह कहता है, किसी की स्त्री हो, मांस खाओं शराब पिओ जो इच्छा करो। न कोई चार-सौ-बीस है और न धोखा फरेब है। लोग कहते हैं, ये गुरु सतलोक गये होंगे। मैं कहता हूं,

जो कुछ मैंने समझा है और यही इनकी समझ में आया है और इन्होंने परदा रखा है तो ये कहीं घोर नर्क में होंगे। अध्यात्मिकता के बारे में कल बोलूंगा।

सब को राधास्वामी !

सत्संग हजूर परमसंत परमदयाल
फकीरचन्द जी महाराज
मानवता मंदिर
होशियारपुर ।

दिनांक 28-12-78

जनम तेरो धोखे में बीता जाय ।
माटी कै गोंद हंस बनिजारा, घड़िगे पंछी बोलनहारा ।
चार पहर धंधा में बीता, रैन गंवाय सुख सोवत खाट ।
जस अंजुल जल छीजत देखा, तैसे झरिगे तरवर पात ।
भौसागर में केहि गुहरबौ, एंठी जौभ जम मारै लात ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, फिरि पछितैहो मल मल हाथ ।
राधास्वामी !

मैं अपने आपसे प्रश्न करता हूं क्यों भई ! तू लोगों को सलाह देता है, सत्संग कराता है, मत्थे टिकवाता है, पैसे लेता है यद्यपि अपने लिए नहीं मगर लेता तो है । क्या तेरा धोखा चला गया ?

क्या तूने जीवन में कुछ किया ? वह क्या धोखा था जिसमें मैं फंसा हुआ था ? जिस प्रकार मैं ठाकुरों को परमात्मा समझकर प्रेम से अपने मन से पूजता था लेकिन ठाकुरों को पूजना एक धोखा था क्योंकि ठाकुर परमेश्वर नहीं थे। फिर राम और कृष्ण का ध्यान करने लगा सिद्ध हुआ कि वह जो मैं अपने मनके प्रेम से राम और कृष्ण का ध्यान करता था वह भी धोखा था। वहां से छोड़कर दाता दयाल के पास आया। दाता दयाल का ध्यान बान्धा। पहले तो दस साल तक रूप का ध्यान ही नहीं वन्धा क्योंकि मेरा पहला ध्यान राम या कृष्ण पर बन्धा हुआ था। उसे तोड़ कर नया ध्यान बाधना कठिन काम था। दूसरे छोटी आयु में विवाह होने के कारण अधिक कामी रहा जिससे मन चंचल था। दाता से मैंने इतना प्रेम किया जिसकी कोई हद नहीं मगर जब मैं जाता और अकेला होता तो वह कहते कि तू अभी काल और माया से नहीं निकला। मैं चकित था। जब मैं 1931 में ताज लेकर गया, वह सायंकाल शौच गये। मैं भी लोटा उठाकर पीछे २ चला गया। शौच आदि से निवृत होकर वहां एक तलाब पर हाथ पांव धोये

और एक पत्थर पर बैठ गये। वह शक्ल इस समय मेरे सामने आती है। मैं उन्हें इस प्रकार देखता रहा जिस प्रकार पंतगा दिये को देखता है और वह मेरी ओर देखते रहे उन्होंने ठन्डा सांस भरा और कहा फकीर! तू एक विचार में बह गया, मेरी आज्ञा मानता चल, काल माया से निकल जायेगा। ये शब्द थे, मुझे याद आते हैं। उन्होंने मेरे इस धोखे को दूर करने के लिए यह सत्संग का काम दिया था। इससे मुझे पता लगा कि मैं जो दाता दयाल का रूप बनाता और वह हर तरह से मेरी सहायता करते मगर जिसे मैं दाता दयाल महर्षि जी के रूप में याद करता था, वह भी मेरी भूल और धोखा था। मैं गुरु को याद नहीं करता था मगर धोखे में था :-

जनम तेरो धोखे में बीता जाये।

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं क्यों फकीरचन्द! तूने अपना जनम धोखे से बचा लिया? जब मुझे सिद्ध हुआ कि मेरे अन्तर जो कुछ भी फुरना फुरती है यह कल्पित और माया है तो फिर मैं दाता दयाल के ध्यान को भी छोड़ जाता हूं। फिर असली चीज़ क्या हुई? आगे प्रकाश और शब्द है जिसे मैं देखता

और सुनता हूं मगर मुझे वह प्रकाश और शब्द भी धोखा दिखाई देता है। क्यों ? क्योंकि प्रकाश को देखने और शब्द को सुनने वाला कोई और है। वह "मैं" और मेरी ज़ात है उसका पता नहीं लगता कि वह क्या है। मैं यहां तक पहुंचा हूं। पता नहीं कि मैं धोखे से निकल गया हूं या मैं अभी धोखे में हूं। यह मुझे पता नहीं।

सब शास्त्र भी ब्रह्म को मानते हैं। मैं भी कहता हूं कि प्रकाश को देखो और नूर को पकड़ो मगर नूर (अपने आप) एक धोखा है। मगर जब तब तुम यहां से नहीं गुज़रोगे तुम्हें यह धोखा मालूम नहीं होगा। इस वास्ते सन्तमत में कहा गया है कि कि गुरु की तलाश करो और इसीलिए मैं कहता हूं कि मैं अनामी धाम से समय के सन्त सत्गुरु के रूप में केवल इस धोखे को दूर करने के लिए आया हूं। क्योंकि हम सब धोखे में हैं। किसी का लड़का मर गया वह रोता है। उससे पूछो कि तू लड़का कहां से लाया था ? उसने धोखे से ही उसे अपना पुत्र समझा, धोखे या भूल से ही अपनी सम्पति समझी

और फिर दुख सुख उठाता है, दाता दयाल का शब्द है।

घट में नूर प्रकाशिया, बरस गया चहुं ओर।
जगमग-जगमग हो रहा, बढ़ा नूर का ज़ोर॥
नूर-नूर सब कोई कहे, नूर न जाने कोय।
गुरु गम परख का ज्ञान जो, नूर कहावे सोय।
आदि अन्त यह नूर है, छाय रहा भरपूर।
जो न लखे इस नूर को, तिस आंखन में धूर।
घट में प्रेम प्रकट भया, आंसू निकले नैन।
धो गये छिन में आंख दौऊ, अब लख नूर का सैन।
राधास्वामी रूप में, दरस नूर का पाय।
तिमिर मिटा अज्ञान का, सतगुरु भये सहाय।

एक आदमी नूर का ही साधन करता है। क्या नूर का साधन करने वाला पतित नहीं होता? विश्वामित्र कितना तपस्वी था, मैनका ने उसे छल लिया। असली नूर ज्ञान और अनुभव है। मैं यह क्यों कहता हूं? मैंने बड़ी रोशनियां देखीं मगर रौशनी देखने के बाद क्या मुझे शान्ति मिल गई? क्या मैं फिर दुखी नहीं हुआ? हुआ। क्या फिर मैं

कामी नहीं हुआ। या मुझे क्रोध नहीं आया ? यह सब हुआ। हमारा यह अभ्यास केवल मन की चंचलताई को दूर करने के लिए है। जब मन की चंचलताई दूर हो जाती है तो फिर उसके साथ ही सत्गुरु की आवश्यकता पड़ती है जो तुम्हें सच्चा ज्ञान देदे। अपने अनुभव के आधार पर कहता हूं कि जो आदमी केवल अन्तर में प्रकाश देखने वाला है सम्भव है उसमें सिद्धि शक्ति आजाये मगर अगर वह चाहे कि वह नहीं गिरेगा, मैं नहीं मानता क्योंकि मैं गिरा, ऋषि और दूसरे कई महात्मा गिरे मगर उन्होंने दूसरे लोगों को नहीं बताया। मुझे सच्चा ज्ञान क्या मिला ? मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या तूने अपना जन्म बना लिया और धोखे से बच गया ? जिस प्रकार मैं धोखे से बचा मैं वह कहता हूं अब मुझे कोई धोखा नहीं। क्योंकि में समझ गया कि जो कुछ भी मेरे अन्तर प्रकट होता है ये ब्राह्य प्रभाव हैं। जब तक मेरा जीवन है ये तो आयेंगे। इन्हें कोई नहीं रोक सकता। जैसे २ संस्कार पड़े हुये हैं, उन संस्कारों में न फंसना और अपनी सुरत को

अपनी ज़ात की ओर रखना ही अपना जन्म बनाना है :-

जनम तेरो धोखे में बीता जाये।

मैंने पाखण्ड नहीं बनाया, जो सच्ची बात थी वह बता दी। मेरा जीवन बिल्कुल सच्चा है। लोग आकर मुझे तंग करते हैं। मेरे पास क्या रखा है? मेरे पास सत्य ज्ञान है उसे तो कोई लेता नहीं, जो मैं कहता हूं उसे कोई नहीं पकड़ता। कोई पुत्र और कोई किसी चीज़ के लिए मेरे पीछे फिरता है :-

जनम तेरो धोखे में बीता जाए।
माटी के गोद हंस बनिजारा, घड़िगे पंक्षी बोलनहारा।
चार पहर धंधा में बीता, ैन गंवाय सुख सोवत खाट।
जस अंजुल जल छीजत देखा, तैसे झरिगे तरवर पात।
भौसागर में केहि गुहंरबौ एंठी जीभ जम मारै लात।

क्या यह ठीक है कि जम लात मारता है? हां! मारता है। हम समझते हैं कि यम कोई नई चीज़ है और जब मरने लगते हैं तो कोई यमराज बाहर से आता है। मेरा अनुभव इसके विरुद्ध है। क्यों? जब

लोगों ने कहा कि बाबा ! अमुक मर गया तो हवाई जहाज़, घोड़ा या पालकी लेकर आया मैं तो नहीं गया, बल्कि जिसके जैसे कर्म होते हैं ओर उसके विचार, विश्वास, जो उसके Sub conscious mind में वज़नी होते हैं वे मरते समय उसके सामने आते हैं और क्योंकि वह जानता नहीं कि यह धोखा है, उसे वह यमराज समझता है। असल में यम खारज करने को कहते हैं तुम्हारा मन संकल्प विकल्प उठाता और शक्लें बनाता है। वे क्या हैं ? वे तुम्हारे मन की Sub Conscious mind की इच्छायें हैं। जो आदमी मरते समय यह समझता है कि उसे लेने के लिए यमराज धर्मराज या बाबा फकीर आया वह धोखे में है ! क्योंकि यमराज और धर्मराज कोई और चीज़ नहीं वे तुम्रारे मन की ही हालतें है जो सबकी बराबर नहीं होती बल्कि अलग २ होती हैं जैसा कि जब कोई मर गया और कुछ समय बाद उसे फिर होश आई और जाग उठा तो हर एक आदमी अपना जुदा-जुदा विचार लोगों को प्रकट करता है।

है वह सार शब्द है। कबीर साहिब ने उसे शब्द विदेह कहा है। हम अशब्द थे। शब्द में फंसे फिर आगे फंसते चले गये। विदेह का भाव है, जिस शब्द का देह नहीं है अर्थात उसकी कोई लय नहीं है। जब आदमी वहां चला जाता है नो उस अनुभव का नाम नाम है और यही स्वामी जी कहा है।

मुरत शब्द दोउ अनुभव रूपा,
तू तो पड़ा भरम के कूपा।

जो कुछ मैंने जीवन में कहा सन्तों ने उसकी पुष्टि की है। आखरी मंजल में जो हमारा घर राधास्वामी दयाल के अनुसार है वहां न खालिक है न खलकत है, न राम न रहीम और न स्वामी न सेवक है। आखरी मंज़ल क्य हुई ? अपनी हस्ती की व्यक्तित्व Individuality को मिटा देना। शव्द प्रकाश मंज़ल पर पहुंचने के लिए मार्ग तो था मगर अन्तिम अवस्था नहीं थी इसलिए इसे धोखा कहा गया। सन्तों ने यह कह तो दिया मगर यह नहीं बताया कि धोखा क्या है। जब तक जीवन है यह धोखा तो रहेगा।

दाता ! तेरे चरनों में गया था और तुझे दाता दयाल के रूप में पूजता था । तूने आज्ञा दी वह कर दिया । बाणी निकली थी । मैंने अपनी हीं आत्मा से पूछा क्यों फकीरचन्द ! क्या तूने अपना जन्म बनाया ? मैंने जो अपना जीवन बनाया और जो मेरी समझ में आया वह मैंने बता दिया । मैंने कोई कसर नहीं छोड़ी ।

सब को राधास्वामो !

सत्संग हजूर आनन्द राव जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर।

दिनांक 17-4-79

हमारे जीवन का उद्देश्य सब दुखों का निवारण करना और जीवन में परमानन्द की प्राप्ती है। यह हमारा पुरुषार्थ है। हम यहां सुख भोगने के लिए नहीं आये। जीवन का उद्देश्य और है। हर बच्चा मां के गर्भ में प्रण करके आता है कि मेरे कर्म भोग को काटने के बाद मैं अपने मालिक के पास चला जाऊं, जहां से आया हूं। लेकिन काल और माया के चक्कर का इतना ज़ोर है कि हम भूल जाते हैं और यहां आकर संसार से नाता जोड़कर पतित होते हैं और अपने प्रण को भूल जाते हैं। कबीर साहिब ने कहा है।

कब सुमरोगे हरी नाम।

इस जीवन के उद्देश्य को पूरा करने के लिए हमें यह शरीर मिला है। यह शरीर सुखों की खान

है। लेकिन हम देखते हैं कि हमें बजाय सुख मिलने के यहां दुख ही दुख हैं। या तो हमने इस शरीर के गुण और धर्म को नहीं समझा या समझकर भी हम अपने बाहर के स्वाद में पड़ गये, काल और माया के आकर्षण में आ गये। सब समझते हैं और सत्संग करते हैं लेकिन जो हमें बाहर में सुख और आनन्द लेने की आदत पड़ी हुई है, उसे नहीं भूलते और हमारा शरीर ऐसा है कि संस्कारों को ग्रहण करता है। आंख से देखने में, आंख से देखी हुई चीज़ अपना संस्कार हमारे मस्तिष्क पर रखती है। जब हम किसी चीज़ को कान से सुनते हैं और उसकी परवाह नहीं करते लेकिन सुनी हुई चीज़ अपना संस्कार डाले बिना नहीं छोड़ती। हाथ से छूते हैं, छुई हुई चीज़ अपना संस्कार रखती है। यह शरीर अति सूक्ष्म है जैसे संस्कारों को ग्रहण करता है वह हमारे मस्तिष्क पर रहते हैं और अनुकूल समय पाकर प्रकट होते हैं तो हमें यह चाहिए कि जितने उत्तम संस्कार हैं उन्हें इस शरीर को ग्रहण करने का अवसर मिले। यदि हम बुरे संस्कारों को ग्रहण करेंगे तो मन से गन्दे

विचार निकलेंये और वे हमसे गन्दा कर्म करोयेंगे ।

हम नहीं चाहते कि किसी समय हमारे मन में गन्दा विचार आये । लेकिन हम विवश हो जाते हैं, गन्दे विचार हमारे मन में आते हैं । इसका क्या कारण है ? यह कि हमने उन गन्दे विचारों को ग्रहण करने का वातावरण नहीं छोड़ा । हमारे मन में इच्छा है लेकिन वातावरण को नहीं छोड़ा । एक प्रोफैसर ऊंचे कुल का था । उसका वातावरण भी बहुत अच्छा था । वह कालिज जाता था । कालिज जाने के दो मार्ग थे । एक बहुत लम्बा मार्ग था वह मार्ग अच्छा था और उसकी सड़क के दोनों ओर वृक्ष, और फूल लगे हुये थे, उनसे सुगन्धी आती थी और बहुत अच्छे संस्कार मिलते थे । लेकिन उस के दिल में विचार आया कि इतनी दूरी का मार्ग करने की वजाय हम *Short cut* क्यों न चलें । कभी अधिक समय नष्ट हो जाता है और देरी हो जाती है तो वह *Short cut* से जाने लगा । वह *Short cut* मच्छली पकड़ने वालों के मुहल्ले में से जाती थी । जब वह उस मार्ग से जाता था तो उनकी बातें

उसके मस्तिष्क पर पड़ती थीं। क्योंकि जाग्रत में वह अच्छा था और उसका मन अच्छी अच्छी चीज़ों को ग्रहण करने की आदत में था, इसलिए जाग्रत में ये विचार उसपर कुछ प्रभाव न डाल सके। अचानक उसे बुखार आया और वह बेहोश हो गया। जब उसे होश नहीं रही तो उसकी ज़वान से उन मछली पकड़ने वालों की गालिएं और ऐसी गन्दी बातें निकलीं कि डाक्टर ने कान पर हाथ रखा और उसे बड़ा शोक हुआ कि इतना बड़ा आदमी और उसकी ज़वान से ऐसी गन्दी बातें निकली। खामोश रहा! चार पांच दिन इलाज किया, बुखार उत्तर गया और स्वस्थ हो गया। फिर मिलने आया और कहा- प्रोफैसर साहिब! वड़ी खुशी हुई कि आप स्वस्थ हो गये लेकिन मन में एक बात है यदि आज्ञा हो तो कहूं, और आप बुरा न मानें तो। उसने कहा- डाक्टर साहिब! खुशी से कहिए। डाक्टर ने कहा- जब तुम्हें बुखार चढ़ा हुआ था और बेहोशी की हालत में थे तो मैंने तुम्हें ऐसी गन्दी बातें करते देखा कि उन से मेरा मन बहुत दुखी हुआ। आप इतने ऊंचे कुल के और आप की ज़वान से ऐसी गन्दी बातें!

प्रोफैसर ने कहा- डाक्टर साहिब ! आप सच कहते हैं। पता नहीं मेरे दिल में यह विचार कैसे आया ? मैं (*Short cut*) का विचार करके हर रोज़ मछली पकड़ने वालों के मुहल्ले से कालिज को जाता था। उनकी बातें मेरे मन पर पड़ी, क्योंकि मैं सदाचारी था, जाग्रत में तो मैं उन्हें कंट्रोल कर सका लेकिन जब मैं बेहोश हो गया तो कंट्रोल नहीं कर सका। इसलिए ऐ सज्जनो !

"यह नर शरीर सुर को भी दुर्लभ है।

देवता इस शरीर को पाने के लिए तरसते हैं। "हीरा जन्म अमोल है कोड़ी बदले जाए" हमने व्यर्थ गंवा दिया और हम अच्छे बुरे संस्कारों को लेते रहे। तुम साधन करते हो और सत्पुरुषों के चरणों में जाकर रोते हो। अगर हमने अपने घर मकान के वातावरण को ठीक नहीं रखा तो क्या लाभ ? साधन करने से पहले अपने शरीर को साधन करने योग्य बनाओ। साधन में क्या करोगे ? हमारा साधन हमें होश से बेहोशी में ले जाता है। वही विचार संस्कार बनकर आते हैं। पहले अपना आचरण ठीक रखें फिर साधन करो। जहां से अच्छे संस्कार मिलते हैं

वहां से हम ग्रहण करें। और जहां गंदे संस्कार मिलते हैं वहां से हम परहेज़ करें एक आदमी साधन करता हुआ भी उन दर्जों को पार कर जाता है और एक आदमी न करता हुआ भी उन मण्डलों पर जाता है। हमारा शरीर जिसका हमने कोई मूल्य नहीं समझा मन के कहने पर नाचता रहता है। इसलिए इस शरीर को बहुत अनमोल समझकर ऐसी २ जगह पर जाओ जहां से अच्छे संस्कार मिलें, हमारा मेल अच्छे मित्रों के साथ हो। साधन करो या न करो। अगर चाहते हो, शरीर आपकी सहायता करे और आपको सहयोग दे तो उसके नियम पर चलो। उसके नियम ये हैं कि शरीर को स्वस्थ रखो।

दूसरे हमारा मन है। इसको ब्रह्मण्ड कहते हैं। इससे आगे परब्रह्मण्ड है। एक समय था हमारे ऋषियों ने मनुष्य जीवन को देखकर, उसकी जांच करके, उन्होंने सोचा कि मनुष्य के अन्तर जो मन है, इस मन के अन्तर बहुत बड़ी शक्ति है। उसकी आत्मा में शक्ति है। वर्णाश्रम धर्म मर्यादा रखी कि पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य, पच्चास वर्ष तक गृहस्थ, पचत्तर वर्ष तक बानप्रस्थ और इसके बाद संन्यास

उन्होंने इस शरीर पर बहुत ध्यान दिया। इसीलिए एक युग ऐसा चला कि हमारी हिन्दुजाति वर्णाश्रम में रही और अर्जुन जैसा वीर पैदा हुआ, कर्ण जैसा दानी पैदा हुआ। अब वर्ण आश्रम, धर्म की मरयादा समाप्त हो गई। आज बूढ़ा है तो घर में ही है। बच्चा है तो घर में ही है और जबान भी घर पर ही है। बच्चे, जवान और बूढ़े की खुराक और पचत्तर साल के बाद हमारा यह आहार अल्प होता है क्योंकि यह शरीर साथ नहीं देता। पिछले साधन बहुत शक्तिशाली हैं लेकिन उस साधन से क्या हो रहा है? किसी को सुख मिल रहा है? इसका कारण क्या है? हमारी शारीरिक परिस्थिती और शारीरिक नियम आचार विचार ठीक नहीं हैं। फिर भी इन बदले हुये हालात में हमें अपने वीर्य की रक्षा करनी चाहिए। स्त्रियें हों या पुरुष हों, युवतियां हों या युबक हों अगर हम चाहें कि इस जीवन में हमारा उद्देश्य पूरा हो और हमें अपनी ज़ात में मिलने का अवसर मिले। हालात बदले हुये हैं। आज क्या हैं? बच्चे हर रोज़ गन्दे दृश्य देखते हैं। हम रोक सकते हैं? उनके मस्तिष्क पर उन गन्दे दृश्यों को देखने

के संस्कार पड़े हुये होते हैं। अब बुढ़ापा तो दूर रहा, बीमारियों और दवाखानों की संख्या बढ़ती जा रही हैं। इसलिए हम वर्णाश्रम धर्म को कायम तो नहीं कर सकते अगर हम यह चाहते हैं कि हमारा साधन प्रफुल्लित हो, हमारा परमानन्द की प्राप्ती का उद्देश्य पूरा हो तो पहले अपने स्वस्थ्य को सम्भालो। अगर तन ठीक है तो मन ठीक है और अगर मन ठीक है तो आत्मा ठीक है जैसे "तन दरुस्त तो मन दरुस्त, मन दरुस्त तो आत्मा दरुस्त। जिसका शरीर ठीक नहीं उसका मन ठीक नहीं। जो मन का कमज़ोर होता है वह इन्द्रियों में आसक्त रहता है, भोग विलास में पड़ा रहता है। उसमें सहनशक्ति नहीं होती, दुखी रहता है बड़ी-बड़ी चीज़ों को सोचने से लाचार होता है।

कमज़ोर मस्तिष्क से कभी अच्छी चीज़ें नहीं निकलती। संसार के विधान में, संसार की उन्नति करने की बुनयाद मानव के विचारों पर है। मन, शरीर की बुनयाद पर रहता है।

ब्रह्म रहे काया के ओहले,
विन काया ब्रह्म क्या बोले?

नौजवानों को अपनी वीर्य शक्ति को सम्भालना चाहिए। ब्रह्मचर्य ही जीवन है। महाराष्ट्र में एक सन्त हुये हैं, उन्होंने कहा है।

ब्रह्मचर्य हेतु जीवन।
वीर्य नाश हेतु मृत्यु॥

मौत आती तो बहुत अच्छा होता लेकिन मौत नहीं आती मौत से मसला हल हो जाता। लेकिन यह दुख इसीलिए है कि मौत आती नहीं है और हमें जीवन नहीं मिलता है यह दुख शारीरिक और मन की कमज़ोरी से है। अशान्ति का क्या कारण है? अशान्ति का कारण वीर्य शक्ति का नष्ट होना है। जितने लोग भक्ति मार्ग में आते हैं उनकी वीर्य शक्ति खोई हुई होती है। उनपर कष्ट आते हैं, विपत्तियें आती हैं उनके अन्तर शहनशक्ति नहीं होती इसलिए ये भक्ति करते हैं, भक्ति का सहारा लेते हैं। मंदिरों में घूमते हैं। लेकिन क्या उसका यह असली इलाज है?

मैं आपको पुष्ट ब्रह्मचर्य का उदाहरण देता हूं। एक साधू जंगल में रहता था। उसका बचपन से एक सेवक

था। उसने कभी बस्ती नहीं देखी थी। उसने केवल पुरुषों को ही देखा था। वह साधुओं को देखता था। उसने कभी स्त्रियों को नहीं देखा था। साधु ने कहा भई! मैं यहां बैठता हूं तू मेरे लिए कुछ मांग के ले आओ। जब वह बस्ती में गया तो उसने अपने जैसा आदमी देखा। लेकिन उसका वेष अलग था, कुछ अजीब शक्ल थी। एक माई ने भीख दी। साधू ने कहा-माई! क्या तुझे छाती पर फोड़े हो गये हैं? उस माई ने समझा कि इसने स्त्रियों को नहीं देखा है। क्या इन बदले हुये हालात में ऐसा हो सकता है?

दूसरा उदाहरण शुकदेव का है। जब शुकदेव जा रहा था तो रास्ते में दो चार स्त्रियें नहा रही थी। उन्होंने उससे कोई परदा नहीं किया। उन्होंने कहा-शुकदेव को जाने दो। इससे परदा करने की कोई आवश्यकता नहीं। वे जल में विलास कर रही थी। इसके बाद व्यास ऋषि आये, तो सबने परदा डाला। व्यास ऋषि ने कहा-कि मैं बूढ़ा आदमी हूं, मेरी काफी आयु हो गई है। मुझसे आप परदा करती हो। शुकदेव नौजवान है, तुमने उससे परदा क्यों

नहीं किया ? वे कहने लगी शुकदेव को पता नहीं तुम्हें पता है। आज वह बात नहीं है, दुख है ! आज हमारे बच्चे जवान होने से पहले ही पतित हो जाते हैं। हालात बदले हुये हैं।

हमने ब्रह्मचर्य को समझ तो ठीक रखा है। अपने वातावरण को अनुकूल रखा। हमारे मस्तिष्क के ऊपर चार ब्रह्म हैं सबल ब्रह्म, शुद्ध ब्रह्म, पार-ब्रह्म और शब्द ब्रह्म। सबल ब्रह्म क्या है ? संकल्प शक्ति, हर आदमी संसार में चाहता है कि उसकी मनोकामणायें पूर्ण हों। संसार में कौन आदमी है जो यह नहीं चाहता कि उसकी मनोकामणायें पूरी हों। अगर तुम अपने उद्देश्य और अपनी मनो-कामनाओं को पूर्ण करना चाहते हो तो उन्हें पूर्ण करने के लिए जहां तक कोशिश हो अच्छे विचार सुनो और सोचो। "शिव संकल्पं अस्तु" जो आदमी शुभ विचार रखता है अपने चारों ओर अच्छा वातावरण रखता है, रहन सहन अच्छी जगह है, पक्का ब्रह्मचारी है अर्थात उसमें वीर्व शक्ति है तो वह सबल ब्रह्म की प्राप्ती कर लेता है। सबल ब्रह्म क्या है ? उसमें

अपने संकल्प को पूरा करने की शक्ति है उसे सबल ब्रह्म कहते हैं।

दूसरा स्थान सहस्र-दल-कंवल का है। अगर हमने वातावरण को ठीक रखा, सदा अच्छे विचार रखते रहे तो हमें साधन करने की आवश्यकता नहीं है, अभ्यास करो या न करो। जब हम अच्छे काम करते हैं हमारी बृत्ति अपने केन्द्र पर अवश्य जायेगी। अगर आचरण अच्छा रहा, विचार अच्छे रहे और वातावरण अच्छा रहा तो हमारे कर्म अनुसार हमारी बृत्ति अपने केन्द्र पर ठहर जायेगी। साधन करने से क्या होता है? उसे और सहायता मिलती है अर्थात "सोने पर सुहागा"। कभी बृत्ति उधर कभी इधर भी ढल सकती है। यदि हमने इन्द्रियों के साथ अच्छा व्यवहार किया, अच्छा योग किया तो इन इन्द्रियों में हमारा शुद्ध ब्रह्म, हमारे अन्तर आनन्द, खुशी और शान्ति पैदा करेगा इसे शुद्ध ब्रह्म कहते हैं। मन बचन कर्म से शुद्ध रहो।

हमें धन से खुशी नहीं मिलती, भोग विलास से खुशी नहीं मिलती। एक तो खुशी शान्ति है कि मन में कोई विचार न हो. तृप्ती रहे, संतोष रहे,

वह वीर्य शक्ति से मिलती है। अगर हमारा वीर्य है और हमने उसे सुरक्षित रखा है, अनर्जी है तो हमारे अन्तर शान्ति आ जायेगी। शान्ति से क्या होगा ? हमारे अन्तर हाय-हाय नहीं रहेगी। जिसके मन में हाय-हाय रहती है उसको चाहे धन कितना ही मिले, उसके मन में तृप्ती नहीं रहती। बंगला मिले, धन धान्य मिले। धन से क्या करेगा ? क्या ये धनी लोग सुखी हैं ? इन्हें और दुख है। चाहे वे राजा महाराज ही क्यों न हों, उन्हें बहुत दुख है।

अगर हमारी इन्द्रियें शुद्ध रहें, इन्द्रियों के सहयोग से कर्म किया तो हमारी वृत्ति अपने आप त्रिकुटी में लगेगी और हमें शान्ति मिल जायेगी, तृप्ती मिल जायेगी, खुशी मिलेगी। हम साधन करते हैं और हमारे मन से हाय-हाय नहीं जाती तो फिर इस साधन से क्या लाभ। दाता दयाल का शब्द है।

जिसके साधन से मिले, सत नाम धन वह जोग है।
नाम से समता न आवे, मन में तब वह रोग है॥
नाम क्या है सुन लो तुम, है नाम गुरु के आसरे।
पोथियों का नाम दुख, चिंता विपत का सोग है॥
जब सतगुरु के हुआ, सतसंग से तुमको लाभ।

यह समझ लो भाग सोया, जागा सुख संजोग है ॥
नाम लो तव गुरु से, अन्तर में चढ़ो युक्ति से आप ।
नाम सच्चा हर्ष और आनन्द, सुख का भोग है ॥
दुख छूटे भव भय मिटे, राधास्वामी के सत्संग से ।
इसकी महिमा से यहां, अनजान सारा लोग है ।

यह नाम है । हम साधन करते हैं । अगर हम अपने क्रोध को रोक नहीं सकते, हमारे घरों में अशान्ति होती है, इस नाम के लेने से क्या लाभ ? पहले अपने घरों में शान्ति रखो फिर इसके बाद नाम लो । पहले अपने भावों को कंट्रोल करो फिर नाम लो । हमारे Sub conscious mind में वे संस्कार रहते हैं जो कुछ हम सोचते हैं । जब हम नाम लेते हैं, विराट से अव्याकृत के देश में पहुंचते हैं वहां वह हज़ार गुणा बढ़ जाते हैं इसलिए अगर नाम लेते हो तो अपने Sub conscious mind में, ब्रह्मण्डी मन में अच्छे संस्कार रखो । अगर साधन करते समय मन विचलित हो, दुखी हो तो साधन मत करो । बैठते रहो लेकिन साधन उस समय करो जब तुम्हारे मन में आनन्द हो । अगर मन से परेशान

होकर साधन करोगे तो परेशानी हज़ार गुणा बढ़ जायेगी, बौराने हो जाओगे।

इस असूल के अधीन अगर गुरु के प्रति श्रद्धा और विश्वास है उसकी मूर्ती का मस्तिष्क में ध्यान पकाया, भाव अच्छे रखे आचरण शुद्ध है, नीयत साफ है, उसका संसार बन जायेगा। इससे लाभ है। मुझे उन्नती मिली। मैं एक बीस रुपये का कलर्क था, साढ़े सात सौ का सहायक सैक्रेटरी बनकर रिटायर हुआ। मुझे जो कुछ मिला, दाता दयाल के दर्शन से मिला। जब दाता दयाल के दर्शन होते थे तो मैं भी बड़ा खुश रहता था। रूप के प्रकट करने और उसका आनन्द लेने से संसार की खुशी मिलेगी। किनको ? जिनके आचरण अच्छे हैं, जिन्हें मन वचन कर्म से शुभ कर्म करने की आदत हो गई है, जिनका बातावरण अच्छा है, उन्हें अबश्य लाभ होता है। लेकिन अगर स्वार्थी गुरु मिला। जिसको अपना स्वार्थ होता है और हम अज्ञानी होकर गुरु चेला भाव में पड़ गये। गुरु के रूप को नहीं समझा बल्कि भाव, विश्वास, श्रद्धा से हमने गुरु की देह को गुरु समझा तो हमारा आगे का रास्ता यहां रुक जायेगा,

किया कराया काम समाप्त हो जायेगा और परमार्थ नहीं मिलता। हम तो उस परमात्मा की खोज में निकले थे।

गुरु को मानुष जानते ते नर कहिए अन्ध।

आगे बढ़ने के लिए हमें यह ज्ञान मिलना चाहिए कि जो रूप हमारे अन्तर प्रकट हुआ है, वह हमारे मन ने बनाया हुआ है और वह हमारी कल्पना है। मगर यह बात बहुत झीनी है। मुझे यह ज्ञान परमदयाल जी महाराज से मिला। किताबों में लिखा हुआ है, लेकिन साफ नहीं था। स्वामी जी महाराज और कबीर साहिब को यह ज्ञान था, मगर उन्होंने साफ साफ नहीं कहा और गुरु गुरु करके लोग बीच में ही रह गये। मालिक सर्वाधार का उनको पता नहीं मिला। अगर हमें यह विश्वास हो गया कि यह रूप जिसको हम बनाकर सहायता ले लेते हैं यह हमारा अपने मन का बनाया हुआ है, कल्पित है, यह रूप समाप्त हो जायेगा और हम आगे की ओर जायेंगे आगे प्रकाश है। इसके बाद गुरु की आवश्यकता है। यह ज्ञान गुरु है। अनुभव सत्गुरु है। गुरु सत्गुरु के

दर्जे में चढ़ा देता है। सत्गुरु नाम अनुभव और ज्ञान का है। इसके बाद गुरु का आदर रह जाता है।

कामी तरे क्रोधी तरे पापी तरे अनन्त।
आन उपासक कृतघन तरे न राम रंटत॥

यह ज्ञान देना गुरु की रक्षा है :-

"गुरु रक्षा जा माहीं।
काल कर्म न भरमाई"।

गुरु नाम ज्ञान का है। जहां से भी हमें मिले, इस ज्ञान को नमस्कार है। गुरु किसी शरीर धारी को नहीं कहते गुरु ज्ञान को कहते हैं। अनुभव करके आगे बढ़ो। इस अनुभव के हो जाने के बाद जीवन बड़ा अच्छा होता है।

संसार में शान्ति से रहने के लिए, यह विश्वास रखो कि जो कुछ हमें मिलता है, हमारे कर्म का फल है, हमारा विश्वास और श्रद्धा है, वह हमें भोगना पड़ेगा चाहे हम कितना ही किसी गुरु के चरणों में रहें। इसका यह भाव नहीं कि हम हाथ पाव न हिलायें। नहीं। कृष्ण भागवत ने भी भगवान गीता में यह ही कहा है। ऐ अर्जुन! कर्म करो। इतना प्रयत्न करो कि तुम्हारा मन यह न कहे कि तुमने यह

बात छोड़ दी है। इसके बाद भी तुम्हें फल नहीं मिला तो उसको कर्म के ऊपर छोड़ दो बस ! खुश रहो, उदास होने की कोई आवश्यकता नहीं। इस ज्ञान से हमारे अन्तर जो हाय हाय है वह समाप्त हो जाती है। जितना जिसको मिलया है उसमें तृप्त रहो। न मिला न सही। जो आदमी इस ज्ञान से साधन करते हुये आगे बढ़े तो वासना क्या होगी ? परम तत्व, परम आधार, उस मालिक की खोज में हर रोज़ अभ्यास करते हुये अपने जीवन को अच्छे रास्ते पर व्यतीत करो। अपनी बासना को स्वच्छ रखो, तुम्हारा कल्याण होगा और तुम्हारी कमाई पूरी होगी।

मैंने बता दिया कि जन्म लेने का क्या उद्देश्य है।

सर्व दुखान निवृति परमानन्द प्राप्ती पुरुष पुरुषार्थ।

मैंने पहले आपको शरीर का असूल बता दिया अपने बातावरण और स्वस्थ्य रखने का विचार दिया। ऐ मानव ! जो शरीर तुझे मिला है, इसे सम्भाल के रख, शुद्ध रख, मन बचन से शुद्ध कर्म कर। मन है, अज्ञान को दूर करके मापुरुषों के

ज्ञान को अपना। अपने मार्ग को बदल। फज़ल की राह पर "शुभ सकल्पं अस्तु" तो दुनियां भी मिलती है और दीन भी मिलता है और जीवन सफल होता है। मैंने यह समझा है।

सब को राधास्वामी !

पत्र व्यवहार द्वारा ज्ञान

प्यारे भाई राधास्वामी !

जन्म जन्मान्तरों के संस्कार जो आदमी पर पड़े हुए होते हैं, उन का भुगतान भुगते बिना नहीं रहता अगर तुम अपने मन से, इस संसार से प्रेम छोड़ दो और अपना प्रेम उस मालिक से जो इस सारी सृष्टि का आधार है जिस का कोई रूप नहीं, सब के रूप उसके हैं, मगर एक रूप मान लो, जिस रूप में मानो, उसे पूर्ण मानो आदमी न समझो, मन को उस रूप में लगा दो बेड़ा पार हो जायेगा।

सारा झगड़ा इस दुनियां से दिल लगाने का है मगर बिना लगाये गुज़ारा भी नहीं। तुम बूढ़े हो, ज़ाहिरा सब बाल बच्चों से प्रेम करो मगर दिल न दो। इस चीज़ अर्थात शान्ति मोक्ष आदि को प्राप्त करने के लिये पिछले ज़माने में कितने कितने तप

करते थे। गुरुओं की सेवा करते थे और तुम मुझ से यह आशा करते हो कि तुम मुझ से मिलो भी नहीं! मेरी बात भी न सुनो, समझो तो तुम्हारा काम बन जाये। यह कलियुग है। कलियुग में हर एक काम जल्दी होता है। पहिले चकमक की आग होती थी फिर दियासलाई आ गई, फिर लैम्प आ गया, गैस आ गई, अब क्या है? बिजली का बटन दबा दो सारा शहर रोशन हो जायगा। ऐसे ही पहले किसी को मारना होता था तो डंडों से मारते थे, फिर कुल्हाड़ी आ गई, फिर बरछे तलवार बन्दूकें आ गई, अब क्या है? पांच छः हाईड्रोजन बम्ब फैंको सारी दुनियां तबाह हो जायेगी।

मैंने तुम को आसान तरकीब बता दी कि मरने से पहले तुम्हारे मन में किसी भी स्थूल चीज़ से मोह न रह जाये, न बाप न बेटा, न राम (जो अयोध्या में पैदा हुआ था) न कृष्ण (जो गोकल में पैदा हुआ था) न रहिद्वार से और न बाबा फकीर की देह से और न ही उस के आश्रम मानवता मन्दिर से। जब ऐसी हालात हो जायेगी जब मरेगा कहां जायेगा? इस दुनियां में तो तुम वापस नहीं आओगे, कहां

जाओगे, वह जो पूर्ण ब्रह्म अखन्डत है जिस को परम तत्व कहते हैं वहां। अगर वहां तक नहीं जा सकते तो उस का कोई रूप मान लो जिस को समझो कि वह पूर्ण ब्रह्म अखन्डत है या सत पद है, काम बना बनाया है। जिस तरह एक औरत है, लड़का उसको मां समझता है लड़के के भाव और होंगे, इसी औरत को दूसरा बहन समझत है, उसके भाव और होंगे, तीसरा उसको अपनी स्त्री समझता है उसके भाव और होंगे, इस वास्ते मैं जो कह रहा हूं अगर इस की समझ आ जाये, यह बात तेरी खोपड़ी में बैठ जाये, तो तुम ने गुरु से नाम ले लिया !

हमारे हां इसी बास्ते कबीर साहिब कहते हैं :-

गुरु को मानुष्य जानते, ते नर कहिये अन्ध।
दुखी होय संसार में, आगे जम का फन्द॥
गुरु किया है देह को, सतगुरु चीन्हा नांह।
कहें कबीर ता दास को, तीन ताप भरमांह॥

और मैं आप को क्या लिखूं, जितनी बुद्धि, समझ, अनुभव मुझको आया मैंने आपके चरणों में भेंट कर दिया। मानव मन्दिर तुम्हारे नाम जारी कर देता हूं, उसको पढ़ लिया करो, अपने मतलब को बात ले लिया करो, बाकी छोड़ दिया करो।

दुनियां आज कल नाम नाम पुकारती है। यह जितने वर्णात्मिक नाम हैं। राम राम, पांच नाम, राधास्वामी नाम वाहगुरु नाम, ओं तत्सत नाम, सोंहग जो ज़वान से रटे जाते हैं यह केवल चंचल मन को रोकने के लिये हैं। जिस नाम से तुम रोक सकते हो, उस नाम से रोक लो। असली नाम तो वह है, जब तुम्हारे मन के जितने ख्याल, मोह, सम्बन्ध हैं, जब यह छूट जायंगे तो तुम्हारा जो अपना ही Self है, उसका उस अपने अखण्डत शब्द या अखन्डत अवस्था के साथ जोड़ देना ही असली नाम की प्राप्ती है। हर मज़हब, पन्थ वाले ने अपने अपने ख्याल से भिन भिन नाम रखे हैं, मैं उस नाम को समझाने के लिये शब्द राधास्वामी प्रयोग करता हूं क्योंकि मेरे गुरु ने मुझे यही बताया था। तुम जिस नाम से प्रेम करते हो उस को अपना लो, मगर मुझ से अगर पूछो तो मैं तो सुमिरन के लिये राधास्वामी बताऊंगा क्योंकि मैं प्रणाली नहीं तोड़ना चाहता।

आपका फकीर :-

राधास्वामी

"संतों की रहनी"

लेखक :—कुवेर नाथ श्रीवास्तव

हम संतों की रहनी की बात करते हैं तुम जानते हो संत किसे कहते हैं ? संत वह है जो आध्यात्मिक आदर्श प्राप्त करके उसको भूल जाता है। तुम निर्धन हो परिश्रम करके धन एकत्रित करके अपने को धनवान समझने लगे क्या तुम वास्तविक धनवान हो गये ? नहीं अभी कसर है। मैं तुमको धनवान नहीं समझता। बात तो तब है जब तुम्हारे दिल में निर्धन और धनवान दोनों का ख्याल जाता रहे। जब तक तुम्हारे दिल में धनवान और निर्धन होने का विचार वाकी है तुम कभी निर्धन और कभी धनवान बन कर काल चक्र के झूले में झूलते रहोगे। तुम कोई विद्या सीखते हो और विद्या को समाप्त कर देते हो क्या तुम्हारे दिल में उस विद्या का

विचार बना रहता है ? तुम एक कक्षा की परीक्षा को पास करके दूसरी कक्षा में जाते हो क्या तुमको पास की हुई परीक्षा का ध्यान रहता है ? संत वह है जो बंधन व मुक्ति दोनों के ख्याल भूल कर दोनों से अलग चला जाता है। हम ऐसे व्यक्ति की रहनी (अवस्था) का वर्णन करना चाहते हैं। सुनो.....

गुरु व सतगुरु की दया से सुरत शब्द योग का साधन करने से संत जन की सुरत (वृत्ति) अति सूक्ष्म होकर रूप रंग और रेखा की सीमा को त्याग कर ऐसी सूक्ष्म हो जाती है जैसे वायु अति सूक्ष्म होने के कारण रूप रंग और रेखा से न्यारी हो जाती है। जो वस्तु जितनी ही सूक्ष्म होगी वह उतनी ही शक्ति शाली और विस्त्रित होगी। अगर तुमने इस बात का अनुभव कर लिया है तो तुम समझ जाओगें कि ग्रहण करने में निर्वलता और त्याग करने में शक्ति है। तुम कहोगे कि जब हम ग्रहण नहीं करेंगे तो त्याग क्या करेंगे। हम तुम्हारी बात को अक्षरशः सत्य मानते हैं जब तुम कमाओगे नहीं तो खर्च क्या करोगे, कमाओ उसको खर्च करके त्याग दो, संचय मत करो हमारा अभिप्राय त्याग से यही है परन्तु सन्तों की दशा कुछ

और हो जाती है। वे ग्रहण व त्याग दोनों करते हैं जो स्वाभाविक है मगर दोनों को भूले रहते हैं और इनमें से किसी का प्रभाव इन पर नहीं पड़ता है। इस बात को सब लोग नहीं समझ सकते। उनके स्वयं का आकर्षण न तो ग्रहण की ओर होता है और न त्याग की ओर होता है। उनके स्वयं का आकर्षण निज स्वयं की ओर होता है जो सब का आधार है और स्वयं निराधार है। अगर कोई इनकी स्तुति करता है तो उससे आकर्षित होकर प्रसन्न नहीं होते एवं अगर कोई उनकी निन्दा करता है तो वे आकर्षित होकर दुखी नहीं होते मगर स्तुति करने वाले व्यक्ति की प्रसन्नता संत की शक्ति से प्रभावित होकर सौ गुनी शक्तिशाली हो जाती है और स्तुति करने वाले को सौ गुणी प्रसन्नता प्रदान करती है। इसके प्रतिकूल निन्दा करने वाले की अप्रसन्नता सौ गुणी तीव्र होकर निन्दक को सौ गुणी कष्ट देकर उसको नष्ट भ्रष्ट कर देती है। इसमें संतों का कोई गुण या दोष नहीं होता है।

इसी नियम पर कहा गया है कि मालिक से मिलने के हेतु अगर तुम एक पग आगे बढ़ाओगे तो

वह अपना स्थान छोड़कर तुमसे मिलने के हेतु सौ पग आगे बढ़ायेगा। अगर उससे न मिलने हेतु एक पग पीछे हटोगे तो वह तुम से न मिलने हेतु सौ पग पीछे हट जायेगा। प्राकृतिक क्रम से ऐसा होना अनिवार्य है संतों को इसका पता तक नहीं होता है। जो जैसा बीज बोता है वह वैसी ही फसल काटता है संत खाद का काम करते हैं वह गन्ने को अधिक मिठाई की शक्ति और मिर्च को अधिक कड़वाई की शक्ति प्रदान करने के उत्तरदाई हैं। उन को न तो गन्ने की मिठाई ग्रहन करने से मतलब है और न मिर्च की कड़वाई त्याग करने से मतलब है। इसीलिए कहा गया है कि उत्तम प्रकृति वालों को संतों से लाभ होता है और नीच प्रकृति वालों को हानि होती है।

संतों की वृत्ति को देह मन और आत्मा प्रभावित नहीं कर सकते। इनकी वृत्ति तीनों के प्रभाव से बाहर चली जाती है। उनका स्वयं निज स्वयं में लीन हुआ रहता है। उनका स्वयं निज स्वयं में आकर्षित है जिस प्रकार वायु अति सूक्ष्म होने के कारण रूप रंग और रेखा खो देती है मगर अपनी हस्ती रखती है उसी

प्रकार संत जन रूप रंग और रेखा से न्यारे होते हुए भी अपनी हस्ती रखते हैं। देह मन व आत्मा में मस्ती है हस्ती नहीं है। हस्ती निज स्वयं और चौथे पद में है वहां जो पहुंच जाता है वह कर्म करते हुए भी अकर्मक है। इसका समर्थन कबीर साहब इस प्रकार करते हैं।

कबीर निरवंध हो रहा वंधा निरवंध होय।
कर्म करे करता नहीं कर्म कहाय सोय॥

जो वस्तु जितनी ही सूक्ष्म होती चली जायेगी वह उतनी ही विस्त्रित व बलवान होती चली जायेगी। तुम देखो पृथ्वी से जल सूक्ष्म है, जल का मंडल पृथ्वी से कितना बड़ा है, वह पृथ्वी को तोड़ फोड़ कर उसको इधर उधर करने में समर्थ है। जल से वायु सूक्ष्म है, वायु का मंडल जल से कितना बड़ा है वह जल को उड़ाने में सर्मथ है। वायु के मंडल की कोई गिनती आकाश के मंडल में नहीं है। आकाश से प्रकाश सूक्ष्म है उसके मंडल का विस्तार इतना बड़ा है कि इसके अन्दर अनगिनत आकाश पड़े हुए हैं। बस इसी प्रकाश शब्द इत्यादि की सूक्ष्मता के

मंडल पर विचार करो तुम चकित रह जाओगे। तुम को यह भी अनुभव होने लगेगा कि पृथ्वी अपने से अधिक सूक्ष्म जल पर आश्रित है। जल अपने से अधिक सूक्ष्म वायु पर आश्रित है और इन दोनों में से किसी का स्तित्व स्थायी नहीं है यानि पूर्ण नहीं है।

इसी प्रकार जो लोग देह के मंडल में हैं वहधन मान भोग विलास के आश्रित हैं जो लोग मन के मंडल में हैं वे बुद्धि विवेक के आश्रित हैं स्थिरताई या पूर्णता कहीं भी नहीं है जो लोग आत्मा के मण्डल में हैं जो मन से सूक्ष्म हैं वे शब्द और प्रकाश के आश्रित हैं। गुरु व संत गुरु की दया से संतजन पहले देह के मंडल में निवास करते हैं धन धान मान बढ़ाई भोग विलास को त्यागते हैं बाद में मन के मंडल में प्रवेश कर जाते हैं और वुद्धि विवेक में भाते हैं स्थिरताई या पूर्णता न पाकर उस को त्याग कर आत्मा के मंडल में आते हैं जहां शब्द व प्रकाश का सहारा है। यहां भी स्थिरताई या पुर्णता न पाकर इसको भी त्याग कर आगे बढ़ते हैं और निराधार या निज स्वयं का सहारा लेते हैं जो किसी के सहारे नहीं है बल्कि स्वयं उसके सहारे हैं।

संत जन आदर्श प्राप्त करने के बाद आदर्श रहित हो जाते हैं आदर्श रहित को संत कहते हैं। जो लोग देह मन व आत्मा के मंडल में रहते हैं वह प्रसन्नता व आनन्द प्राप्त करने के हेतु वही काम करते हैं जो काम हम प्रकाश प्राप्त करने के हेतु करते हैं। हम दीपक बत्ती व तेल एकत्रित करते हैं तब दियासलाई जला कर उसको प्रकाशित करते हैं। दीपक का प्रकाश तेल या वत्ती के समाप्त होने या हवा के झोके से नष्ट हो जाता है और हमारी प्रसन्नता आनन्द व शान्ति भंग हो जाती है मगर संत स्वयं प्रकाशमय होते हैं।

जैसे फूल से सुगन्ध मन से विचार तथा हीरे से प्रकाश स्वतः निकला करता है संत जन शान्ति के आश्रित नहीं होते,शान्ति स्वयं उनसे इस प्रकार निकला करती है जैसे स्रोत से पानो स्वतः निकला करता है। तुम लाख प्रयास करो कि हीरे से प्रकाश, फूल से सुगन्ध, स्रोत से पानी निकलना बन्द हो जाये, मगर इस कार्य से असफल रहोगे यह प्राकृतिक है। प्राकृतिक नियम को कोई टाल नहीं सकता। याद रखो जब तब किसी का सहारा लोगे, किसी से प्रेम रखोगे, आवागमन के चक्कर से

बच नहीं सकते इस कारण संत जन निराधार हो जाते हैं।

कोई हम दम न रहा कोई सहारा न रहा।
न रहे और के हम कोई हमारा न रहा॥

(1) कोई देह के मंडल में फंसा है, और कोई मन के मन्डल में फंसा है और कोई आत्मा के मंडल में फंसा है। सुर नर मुनी सब के सब आवागमन के चक्कर में फंसे हुए हैं कोई स्थूल कोई सूक्ष्म कोई अति सूक्ष्म के चक्कर में फंसा है कोई इनमें से बाहर जाने का प्रयास नहीं करता। संत जन इन सब को छोड़ जाते हैं। कवीर साहब इसका समर्थन इस प्रकार करते हैं।

झीनी-झीनी बीनी चदरिया॥ टेक॥
काहे कै ताना काहे कै भरनी।
कौने तार से बीनी चदरिया॥ १॥
इंगला पिंगला ताना भरनी।
सुषमन तार से बीनी चदरिया॥ २॥
आठ कंवल दल चरखा डोलै।
पांच तत्व गुन तीनी चदरिया॥ ३॥
सांई को सियत मास दस लागे।
ठोक-ठोक के वीनी चदरिया॥ ४॥

सो चादर सुर नर मुनी ओढी ।
ओढी के मैली कीन्ही चदरिया ॥ ५ ॥
दास कबीर जतन से ओढी ।
ज्यों की त्यों धर दीन्ही चदरिया । ६ ।

इसका आशय यह है कि संत जन देह मन व आत्मा तीनों के मन्डल में रहते हैं, तीनों से काम लेते हैं न्यारे रहते हैं प्रभावित नहीं होते । मगर सुर नर मुनी तीनों में रहते हैं काम करते हैं और अपने काम मैं लम्पट होकर तीनों को मैला करते रहते हैं मगर संत जन इसको ज्यों का त्यों छोड़ कर न्यारे रहते हैं ।

हमने अपनी सुना दी अब तुम कहो कि क्या समझा और क्या नहीं समझा ।

राधास्वामी !

मेरी करबद्ध प्रार्थना

भारत वासियो ! बचपन से किसी चीज़ की तलाश थी, जिस को मैं मालिक या राम समझता था, एक दृश्य द्वारा सन् १९०५ ईसवी में हज़ूर दाता दयाल महर्षि शिव ब्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गई। उन्होंने सन्तमत दिया। इस सन्तमत के समझने में या जिस चीज़ की तलाश थी उसको पाने में तिरानवें साल का हो गया। अब वह चीज़ क्या निकली ? वह एक अवस्था है जहां मैं अपनी हस्ती को, हैपने को भूल जाता हूं जो कुछ बाकी रह जाता है उस को ब्यान करने के लिये शब्द नहीं मिलते। बस यह मिला मुझे।

क्योंकि हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे जिम्मे निबल, अबल, अज्ञानी जीवों की सहायता, जगत कल्याण और साथ ही जीवों को भव सागर से पार करने का काम लगाया था जिसे आज उनतालीस साल से करता हुआ चला आ रहा हूं, मैं ने जो काम किया यह मेरे निज अनुभव के आधार पर है अथवा आप बीती को सामने रखते हुए किया।

गुरु आज्ञा का पालन करने के सिलसिले में मैंने मानवता मन्दिर की नींव रखी। जो कुछ मैंने कहा वह पुस्तकों अथवा मानव मन्दिर पत्रिका के रूप में आज कल प्रकाशित होता है। ब्राह्मण होने के नाते जो प्रकाशन मन्दिर से होता है उस का मूल्य नहीं रखा क्योंकि ब्राह्मण के लिये वेद बेचना पाप है, वेद नाम है ज्ञान का। पुस्तकें बड़ी होती हैं और दिन प्रति दिन मांग बड़ रही है। इस लिये मैं हाथ बांध्र कर कहूंगा कि जिन सज्जनों को मेरे अनुभव से सहमति न हो यूंहि किताबें मंगवाकर, क्योंकि ये मुपत मिलती हैं, मंन्दिर की हानी न करें।

अब किताबें अंग्रेजी और पंजाबी भाषा में भी मिलती हैं जो कि निम्न लिखित हैं।

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੁਚੀ

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ, 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ। 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ। 4. ਮਾਨਵਤਾ। 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ। 6· ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ।

अंग्रेज़ी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans
2. A Word to Canadians
3. Manavta the true religion
4. Religious Research
5. Weight of Soul
6. Truth Always Wins
7. Essence of Truth
8. Science of God Realization
9. True Sanatan Dharama or True Religion of Humanity
10. Jeewan Mukti
11. Art of happy living
12. Realization of Reality.
13. Masti speaks to Foregion

जिन को ज़रूरत हो वह मंगवा सकते हैं हम बिना मूल्य भेज देंगे। मगर यह मुफ्त का काम कब तक चलेगा ? इस लिये जो सज्जन यह समझते हैं कि जो कुछ मैं ने इन किताबों में लिखा है इस में कुछ सच्चाई है, इस पर आचरण करने से इन्सान का पारिवारिक, सामाजिक और आत्मिक जीवन सुधर कर निर्वाण को प्राप्त हो सकता है तो यथा शक्ति मन्दिर की सहायता करें ताकि यह सब काम जारी रखा जा सके।

सरकार के आयकर के नियमानुसार ट्रस्ट वालों को साल में जितनी आय अथवा दान आता है वह उसी

साल में खर्च करना पड़ता है इसलिये मैंने जनता, विशेष कर गरीब रोगियों के इलाज में सहायता करने के लिये तीन हस्पताल एलोपैथिक, डेन्टल व होमियोपैथिक खोले हुए हैं मगर मुसीबत यह है कि बजाय गरीबों के अमीर आदमी अधिकतर इलाज कराने के लिए आते हैं। इसलिये अगर कोई सज्जन इस काम में सहायता करना चाहता है तो करे मगर, यह विनती अवश्य करूंगा कि जो धनी लोग हैं वह यहां हस्पताल से मुफ्त दवाई न लें।

भारत वासियो ! मैंने जो कुछ किया निज स्वार्थ या संतमत के पक्ष में इसे सच्चा सिद्ध करने के लिये नहीं किया। मालिक के मिलने की तलाश थी जिस को हम ईश्वर परमेश्वर समझते थे। मेरा भाग्य अथवा दुर्भाग्य इस संतमत या राधास्वामीमत में ले आया। यहां इन संतों ने तमाम धर्मों, वेदान्त या सूफीमत तक का भी खण्डन किया हुआ है। आत्मा खण्डन सहन नहीं कर सकती थी इसलिये प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा। दाता दयाल जी महाराज ने काम दिया था। तुम ही सोचो राधास्वामीमत वालों की किताबों में संतों की इतनी

बड़ाई लिखी हुई है कि वह ईश्वर, परमेश्वर के पैदा करने वाले हैं, बस, इसी एक राज़को जानने के लिये मैंने अपना जीवन खो दिया कि संतमत वालों के पास क्या चीज़ है जो ईश्वर और परमेश्बर को भी पैदा करने वाले समझते हैं। दाता दयाल जी महाराज पर मेरा विश्वास तो नहीं टूटा मगर बाणी भेद नहीं देती थी। इसलिये प्रण किया था कि जो समझ में आयेगा बता जाऊंगा और दाता जी ने कहा था कि शिक्षा बदल ज़ाना। हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज ने भी हुक्म दिया था कि निर्भय होकर काम कर जाना, सो कर चला, मेरा निज अनुभव मानता है कि संत बनना कोई सरल काम नहीं है। मुझ पर समय समय पर संतपने की हालत तारी होती है, चौबीस घण्टे नहीं। अब यह प्रार्थना है कि यह संसार मेरे लिए सदा के लिये लोप हो जाये और अपनी हस्ती खो कर ज़ात में समा जाऊं मगर यह उसकी इच्छा है।

फकीर

सूचना

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग 22 जुलाई 1979 को होगा।

सैक्रेटरी :-

Regd. No. 26265/74
MANAV MANDIR

JULY 10th 1979
NW—HSP—7.

ADDRESS

To

1283 Sh. A. Hanmanth Rao
H.No. 10-3-194/8
Hamayun Nagar, Hyderabad
28 (A.P) 500028

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.
Phone : 2022